संदेश

मैं भा कृ अनु प - केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचिन एवं सभी अनुसंधान केन्द्रों के सभी सहकर्मियों को विश्व हिन्दी दिवस के सुअवसार पर अभिवादन करता हूँ। अनेकता में एकता यह है हिंद एवं हिन्दी की विशेषता। भारत जैसे बहुभाषिक देश के सामाजिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता हिन्दी में है। हिन्दी, एक संपर्क भाषा, राष्ट्र भाषा, राजभाषा अब विश्व भाषा के रूप में प्रगतिशील है। इस विकासशीलता की परिकल्पना की ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा।

आप सब जानते है कि 14 सितंबर को हिन्दी को सांविधान में राजभाषा के रूप में मान्यता मिली। सन् 1975 में नागपूर में संपन्न प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी-विश्व भाषा के स्वर का शंखनाद हुआ। वर्ष 2003 में सुरिनाम में आयोजित सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में विश्व हिन्दी दिवस मनाने की परिकल्पना का जन्म हुआ। वर्ष 2006 में 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस को वैश्विक स्तर पर मनाने का संकल्प किया गया। विदेश मंत्रालय की अगुवाई में इस प्रतिष्ठित दिन का भव्य आयोजन सभी मंत्रालयों एवं राजदूतावासों में संपन्न होने लगा।

भारत सरकार के प्रयासरत हिन्दी का बहुआयामी विकास हुआ है। प्रशासन एवं कार्यालयों में राजभाषा के रूप में प्रचालित हिन्दी, बाजारों में आम बोलचाल की हिन्दी, विज्ञापन में वाणिज्यिक हिन्दी, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में वैज्ञानिक हिन्दी, साहित्य में साहित्यिक हिन्दी, क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रगत् हिन्दी के विभिन्न रूप से सुसज्जित भाषा की सुन्दर छावि विश्व पटल पर संस्थापित करने का उत्तरदायित्व हम सब पर है। इस सुअवसार पर मेरा आग्रह है कि आप सब अपने छोटे छोटे प्रयास कर इस संकल्प से जुड़े रहें।

रविशंकर सी एन

डॉ.रविशंकर सी.एन.

निदेशक

10 जनवरी 2022